International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 10-09-2022, Accepted: 26-09-2022, Published: 12-10-2022
Volume 8, Issue 5, 2022, Page No. 50-51

भारतीय पारम्परिक चिकित्सा यूनानी में विभिन्न खुराक रूप

Dr Reesha Ahmed, Dr Mohd Wasim Ahmed, Dr Asma Sattar Khan, Shoeb Ahmed Ansari, Dr R P Meena
औषधि मानकीकरण अनुसंधान संस्थान, के.यू.चि.अनु.प., आयुष मंत्रालय भारत सरकार, पीसीआईएम एंड एच कैंपस, कमला नेहरू नगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
पारंपरिक चिकित्सा आज अधिक महत्व और अनुप्रयोग प्राप्त कर रही है, खासकर जब हम कई चिकित्सा स्थितियों के प्रबंधन में कठिनाई का सामना कर रहे हैं। आधुनिक युग में अधिक प्रभावी और स्वादिष्ट दवा खुराक रूपों की आवश्यकता है। पारंपरिक औषधियों के खुराक रूपों में हाल की प्रवृत्ति घुलनशीलता, जैवउपलब्धता, औषधीय गतिविधि, स्थिरता को बढ़ाने, विषाक्तता को कम करने और अनुपालन बढ़ाने आदि की है। वैश्विक स्तर पर अनुकूलन हेतु यूनानी और अन्य भारतीय पारंपरिक चिकित्सा फार्मेसियों में खुराक रूपों सम्बंधी तत्कालिक रुझानों को अपनाने की अत्यधिक आवश्यकता है ।मूल रूप से यूनानी खुराक के रूप को 1) ठोस, 2) अर्ध–ठोस 3) तरल 4) गैसें रूप में विभाजित किया गया है।

मूल शब्दः चिकित्सा, खुराक रूप, यूनानी तथा औषधीय

प्रस्तावना
यूनानी चिकित्सा पद्धति की उत्पत्ति यूनान से हुई। हिप्पोक्रेट्स (460–377 ईसा पूर्व) प्राचीन यूनानी दार्शनिक–चिकित्सक थे जिन्होंने चिकित्सा को जादू और अंधविश्वास के क्षेत्र से मुक्त किया। यूनानी चिकित्सा के मूल सिद्धांत उनकी शिक्षाओं पर आधारित हैं। हिप्पोक्रेट्स के अतिरिक्त, बहुत से अन्य यूनानी विद्वानों ने इस प्रणाली को सुद्रढ़ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।[1]

गैलेन पौधों के सक्रिय घटकों के समाधान तैयार करने वाले पहले व्यक्ति थे, इसलिए शब्द "गैलेनिकल्स" प्रयोग में आया। लेकिन आज, शब्द 'गैलेनिकल्स' किसी भी प्रकार की तैयारी के लिए ढीले, और अक्सर गलत तरीके से लागू किया जाता है, भले ही यह एक कच्ची दवा का अर्क हो या रसायनों का समाधान हो। उस समय से, ग्रीक और अरब चिकित्सकों ने गैलेन की तकनीकों में सुधार करने की कोशिश की है और आवश्यकता के अनुसार नए खुराक रूपों की खोज भी की है। पौधे, पशु और खनिज से प्राप्त औषधियां, शायद ही कभी रोगियों को उनके कच्चे रूपों में प्रशासित या वितरित की जाती हैं, बल्कि खुराक के रूप में तैयार की जाती हैं जो उत्पादों की गुणवत्ता, सटीक खुराक, भविष्य कहनेवाला चिकित्सीय प्रतिक्रिया, नुस्खे और प्रशासन की सुविधा के साथ–साथ उपयोग के अनुपालन को सुनिश्चित करती हैं। फार्मेसी के क्षेत्र में प्राचीन चिकित्सकों और दार्शनिकों द्वारा किए गए अपार काम के कारण यूनानी फार्माकोपिया लगभग 60 विभिन्न प्रकार के खुराक रूपों से भरे हुए हैं, लेकिन दुर्भाग्य से अब लगभग 20 खुराक के रूप प्रचलन में हैं।[2]

यूनानी चिकित्सा पद्धति में खुराक रूपों को मोटे तौर पर उनकी अवस्था के अनुसार चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता हैः ठोस खुराक के रूपः हब्ब (गोलियाँ), कुर्स (टैबलेट), सूफूफ़ (पाउडर) आदि; अर्ध–ठोस खुराक के रूपः माजून, जवारिश, इत्रिफल आदि; तरल खुराक के रूपः शरबत (सिरप), सिकंज़बीन, अर्क (डिस्टिलेट) आदि और गैसीय खुराक के रूपः बखूर, शमूम, इंकबाब आदि।[3, 4]

यूनानी एकल और मिश्रित औषधियों के खुराक रूपों का उल्लेख यूनानी शास्त्रीय साहित्य में मिलता है। वे अपने प्राचीन काल से नहीं बदले हैं, इसलिए आधुनिक तकनीकों के आधार पर खुराक रूपों के मूल्यांकन की आवश्यकता यूनानी प्रणाली के लिए एक बड़ी चुनौती है, ताकि इसे सभी के लिए स्वीकार्य और सुखद बनाया जा सके। इसलिए प्रयोग और अपेक्षित शोध की मूल बातें जानने की जरूरत है।

खुराक रूपों में परिवर्तन की आवश्यकता
- हर्बल दवा का उपयोग आज अधिक प्रासंगिकता प्राप्त कर रहा है, विशेष रूप से इस मान्यता के साथ कि हम मधुमेह और कैंसर जैसी कुछ चिकित्सीय स्थितियों के उपचार में अधिक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इसलिए, आधुनिक युग में अधिक प्रभावी और स्वादिष्ट दवा खुराक रूपों की आवश्यकता है।
- वायुमंडलीय ऑक्सीजन या आर्द्रता (लेपित गोलियां, सीलबंद शीशी) के विनाशकारी प्रभावों से औषधीय पदार्थ की रक्षा के लिए।
- मौखिक प्रशासन (एंटरिक कोटेड टैबलेट) के बाद औषधीय पदार्थ को गैस्ट्रिक एसिड के विनाशकारी प्रभाव से बचाने के लिए।
- किसी मादक पदार्थ (कैप्सूल, लेपित गोलियां, स्वादयुक्त सिरप) के कड़वे, नमकीन या आक्रामक स्वाद या गंध को छिपाने के लिए।
- वांछित वाहन (निलंबन) में या तो अघुलनशील या अस्थिर पदार्थों की तरल तैयारी प्रदान करने हेतु ।
- दर–नियंत्रित औषधीय क्रिया हेतु (विभिन्न नियंत्रित–रिलीज़ टैबलेट, कैप्सूल और निलंबन) प्रदान करने के लिए।
- स्थानिक प्रशासन साइटों (मलहम, क्रीम, ट्रांसडर्मल पैच, नेत्र, कान, और नाक की औषधियां) से इष्टतम औषधीय कार्रवाई प्रदान करने के लिए।
- शरीर के किसी एक छिद्र (रेक्टल या वेजाइनल सपोज़िटरी) में औषधि डालने की व्यवस्था करना।
- औषधियों को सीधे रक्तप्रवाह या शरीर के ऊतकों (इंजेक्शन) में प्रशासित करने की व्यवस्था करना।
- इनहेलेशन थेरेपी (इनहेलेंट और इनहेलेशन एरोसोल) के माध्यम से इष्टतम औषधीय कार्रवाई प्रदान करना।[3]

सामान्य यूनानी खुराकों के रूप

- हब्ब (गोलियाँ) / Habb (Pills)
- कुर्स (टिकया) /Qurs (Tablet)
- शरबत / Sharbat (syrup)
- रोगन (तेल) /Roghan (Oil)
- मरहम / Marham
- सफूफ़ (पाउडर) सुनून (टूथ पाउडर), ज़रूर (डस्टिंग पाउडर) /Safoof (Powder) Sunoon (Tooth powder), Zaroor (Dusting powder)
- शय्याफ़ / Shyaf
- अर्क /Arq
- जोशांदा (काढ़ा) / Joshandah (Decoction)
- खेसांदा (जलसेक) / Khesandah (Infusion)
- गुलकंद, मुरब्बा और सिकंज़बीन / Gulqand, Murabba and Sikanjabeen
- माजून (लबूब, इत्रिफल, जवारिश, मुफर्रेह, खमीरा) / Majoon, (Laboob, Itriphal, Jawarish, Mufarreh, Khameerah)
- ज़िमाद /Zimaad
- कैरूती / Qairooti
- मज़ूघ /Mazoogh
- आँख की दवा / Eye Drops
- सपोज़िटरी / Suppository
- मलहम / Ointments
- लिनिमेंट्स / Liniments
- फेस पाउडर /Face Powder
- दंत चिकित्सा /Dentifrices
- टूथ पेस्ट / Tooth Pastes
- केश रंगना / भ्पत क्लम
- फेस पैक / Face Pack
- हाथ धोना / Hand Wash
- जेल /Gel
- शैम्पू /Shampoo
- एरोसोल /Aerosol
- स्प्रे / Sprays [4, 5]

निष्कर्ष

बगदाद में शुरुआती अब्बासिया खलीफाओं के संरक्षण में नौवीं शताब्दी तक फार्मेसी को चिकित्सा से अलग इकाई के रूप में मान्यता दी गई थी। इस प्रारंभिक वृद्धि और इस्लाम में पेशेवर फार्मेसी के विकास से यूनानी प्रणाली विभिन्न प्रकार के खुराक रूपों से समृद्ध होती हुई है. लेकिन वर्त्तमान में दुर्भाग्य से शियाफ, गाजा, घलिया, नूरा आदि जैसे विभिन्न शक्तिशाली और प्रभावी खुराक के रूप प्रचलन में नहीं हैं क्योंकि वे यूनानी दवा कंपनियों द्वारा निर्मित नहीं किये जा रहे हैं। अगर कुछ और वर्षों तक ऐसा ही चलता रहा, तो हमारी आने वाली पीढ़ियाँ उन्हें भूल जाएँगी और ये खुराक के रूप इतिहास बन जाएंगे। इसलिए बचे हुए खुराक रूपों की समीक्षा करना और मानवता की मदद करना समय की मांग है।

सन्दर्भ

1. Anonymous. The Unani Pharmacopoeia of India. Part-II, Vol. 2nd. New Delhi: CCRUM, Ministry of H & F.W. Govt. of India, 2007, 3.
2. Marriott JF, Wilson KA, Langley CA. Pharmaceutical Compounding and Dispensing. UK: Pharmaceutical Press, 2010, 17.
3. Ahsan A. Qarabadeene Ahsani. New Delhi: CCRUM, Ministry of Health & F.W. Govt. of India,2006:3:19.
4. Aniketh B. Surve Manohor J, Patil Prasad V, Kadam Prasad V, Patrekar. Unani Dosage Form- The Review, Journal of Pharmacy and Experimental Medicine, Med,2022:2(2):1-2.
5. Zaigham, Hamiduddin, Abdullah Tauheed, Akhtar Ali. Recent trend in traditional medicine dosage form and present status of unani and ayurvedic medicine, International Journal of Pharmaceutical Sciences and Research,2019:10(4):1640-1649.